Hon'ble chairperson and chief guest
Mrs. Meira Kumar, Speaker Lok Sabha,
Hon'ble Deputy Chairman Rajya Sabha Mr. K. Rahman
Khan, Hon'ble Deputy Chairman Senate of Pakistan
Janab Mir Jan Muhammad Khan Jamali,
Hon'ble Deputy Speaker, Lok Sabha
Shri Karia Munda, Hon'ble Secretary-General
Commonwealth Parliamentary Association
Dr. William F. Shija, Hon'ble distinguished
Representatives of National and Provincial Assemblies
from the Member countries Bangladesh, Maldives,
Pakistan, and Sri Lanka of Commonwealth Parliamentary
Association India and Asia Region,
All the Hon'ble delegates from State Branches of Indian
Union, Hon'ble Ministers, Hon'ble Members of
Parliament, Secretaries- General, Principal Secretaries,
Secretaries, invited dignitaries, officials
and media-persons

At the opening ceremony of 4th India and Asia Region Commonwealth Parliamentary Association Conference in the newly carved state of Chhattisgarh. I extend my heartiest greetings. On this occasion first of all I express my sincere gratitude to honourable Chairperson and Speaker Lok Sabha Smt. Meira Kumar, who has kindly consented to hold this prestigious conference in Chhattisgarh State. It is with her inspiration and guidence, it could have been possible to host such a big event.

सम्मेलन की माननीय सभापति एवं मुख्य अतिथि
श्रीमती मीरा कुमार, अध्यक्ष लोकसभा,
माननीय उपसभापति, राज्यसभा श्री के. रहमान खान,
माननीय उपसभापति, सीनेट ऑफ पाकिस्तान
श्री मीर जान मोहम्मद खान जमाली
माननीय उपाध्यक्ष, लोकसभा श्री कड़िया मुण्डा जी,
डॉ. विलियम एफ. शिजा,
राष्ट्रकुल संसदीय संघ के महासचिव
राष्ट्रकुल संसदीय संघ एशिया क्षेत्र के सदस्य बंगलादेश,
मालदीव्स, पाकिस्तान, श्रीलंका की राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय
असेम्बली से पधारे माननीय प्रतिनिधिगण,
भारत क्षेत्र के समस्त विधान मण्डलों से पधारे माननीय
प्रतिनिधिगण, छत्तीसगढ़ राज्य मंत्रीमण्डल के माननीय
मंत्रीगण, माननीय सांसदगण, माननीय सदस्यगण,
विधायी निकायों से पधारे महासचिव, प्रमुख सचिव एवं
सचिवगण, उपस्थित अन्य आमंत्रित, अधिकारीगण
एवं पत्रकार बंधु

चतुर्थ भारत एवं एशिया क्षेत्र राष्ट्रकुल संसदीय संघ सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर आप सभी महानुभावों का भारत भूमि के नवोदित राज्य छत्तीसगढ़ में आपका आत्मीय अभिनंदन करता हूँ। इस अवसर पर मैं सर्वप्रथम लोकसभा की माननीय अध्यक्षा श्रीमती मीरा कुमार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ कि उन्होंने इस सम्मेलन को छत्तीसगढ़ राज्य में आयोजित करने हेतु अपनी सहमति दी। यह वृहद आयोजन उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा से ही सम्भव हो सका है।

Rich in glorious traditions of extending warm reception to the guest established by Mata Shabri it is indeed a matter of pride that the distinguished delegates from India, its states and neighbouring countries Bangladesh, Maldives, Pakistan and Srilanka are assembled in the magnificent premises of this apex democratic institution of the State of Chhattisgarh.

The State of Chhattisgarh was carved out from earst while state of Madhya Pradesh as 26th state of Indian Union on 1st November, 2000. It is second occasion in a decade when Legislatures of India have gathered in the premises of this apex democratic Institution but it is maiden occasion when delegates of neighbouring countries with parliamentary form of governance have assembled here. At this historical occasion I welcome you all from the core of heart.

On this historical occasion I would like to apprise you about historical, spiritual and mythological background of Chhattisgarh State.

Chhattisgarh has been crowned with glory for being the birth place of Kaushalya the mother of our adorable deity Shri Ram. In our mythological scriptures Varaah Mihir, Jyotish Purana, Vishnu Purana and Vaayu Purana

आतिथ्य की गौरवशाली पुरातन परम्परा को स्थापित करने वाली माता शबरी का यह प्रदेश सदैव से ही आगंतुकों का हृदय से स्वागत करता रहा है, यह गर्व और हर्ष का विषय है कि छत्तीसगढ़ राज्य की सर्वोच्च प्रजातांत्रिक संस्था के इस भव्य प्रांगण में भारत एवं इसके राज्यों के प्रतिनिधियों के साथ–साथ हमारे पड़ोसी देशों बंगलादेश, मालदीव्स, पाकिस्तान, श्रीलंका के प्रतिनिधि भी उपस्थित हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य का गठन भारत गणतंत्र के 26 वें राज्य के रूप में पूर्ववर्ती मध्यप्रदेश राज्य से विभाजित कर 1 नवम्बर 2000 को हुआ। इस एक दशक में यह दूसरा अवसर है जब इस राज्य की सर्वोच्च प्रजातांत्रिक संस्था विधान सभा के प्रांगण में भारत के समस्त विधान मंडलों का समागम हो रहा है, लेकिन यह प्रथम अवसर है जब हमारे पड़ोसी संसदीय व्यवस्था वाले राष्ट्र के प्रतिनिधि भी उपस्थित हैं। मैं हृदय की गहराई से इस ऐतिहासिक अवसर पर आप सभी का स्वागत करता हूँ।

अपनी बात आरंभ करने के पूर्व मैं अपने छत्तीसगढ़ प्रदेश के ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और पौराणिक पृष्ठभूमि से आपको परिचित कराना चाहूँगा।

छत्तीसगढ़ को भारतीय हिन्दू समाज के आराध्य देव श्री राम की माता कौशल्या की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में वराहमिहिर, ज्योतिष पुराण, विष्णु पुराण, वायु पुराण तथा पाण्डुवंशी अभिलेखों में छत्तीसगढ़ का वर्णन

and in documents of Pandu Dynasty, this region has been mentioned as "Dakshin Kausal". The history of Chhattisgarh bears witness to several empires. Royal dynasties like Saatvaahan, Meghvansh Vakatak and Chalukya have ruled the region. There is limitless depository of unique resources in the jewel-impregnated-earth-womb of Chhattisgarh, besides this there is treasure of interesting historical facts in her bowels. There is a belief, because of 36 garh (citadel) existed in this region was named as Chhattisgarh. According to gazetteer of Raipur district of 1973, 18 garh (citadel) were on the south of Shivnath river- the Raipur kingdom and 18 garh (citadel) were on the Northern side of Shivnath river- the Ratanpur Kingdom. Another school of thought suggests that the word "Chhattisgarh" has been derived out of "Chedishgarh" as the rulers of Chedish dynasty had their kingdom in this region for many years.

The hallmark of civilization and culture of Chhattisgarh is its unique identity. The inherent link between the gone-bye era and contemporary age is still potential even today, in the civilization of this region, which is more than five thousand years old. The Buddhist monasteries constructed by Ashoka in Bastar, the relics of the ancient civilization of Sirpur still narrate the tale of glorious epoch and its legacy. The rich tradition of theatre of the region, the most ancient cave like theatre in Ramgarh is also vindication of great civilization of this place.The dance of Raigarh Gharana, Asia's one and only university

''दक्षिण कौशल'' के रूप में मिलता है। छत्तीसगढ़ का इतिहास अनेक साम्राज्यों का साक्षी रहा है। सातवाहन, मेघ वंश, वाकाटाक और चालुक्य आदि महान राजवंशों का यहॉ शासन रहा है। जहां छत्तीसगढ़ की रत्नगर्भा धरती में विलक्षण संसाधनों का असीमित भण्डार है, तो इसके गर्भ में भी इतिहास की दिलचस्प जानकारियों का खजाना है। एक मान्यता यह है कि छत्तीसगढ़ का नामकरण इस क्षेत्र में 36 गढ़ों के स्थित होने के आधार पर हुआ। रायपुर जिले के 1973 के गजेटियर के अनुसार इनमें से 18 किले यानी गढ़ शिवनाथ नदी के दक्षिण अर्थात् रायपुर राज्य के अंतर्गत स्थित थे और शेष 18 शिवनाथ नदी के उत्तर में रतनपुर राज्य के अंतर्गत व्यस्थित रहे हैं। एक अन्य मान्यता के अनुसार छत्तीसगढ़ शब्द ''चेदिश गढ़'' का अपभ्रंश है जो कि इस क्षेत्र के कई वर्षों तक चेदिश राजाओं के आधिपत्य में रहने के कारण उद्धृत हुआ।

छत्तीसगढ़ की सभ्यता और संस्कार की विशिष्टता ही उसकी विशेष पहचान है। छत्तीसगढ़ की पांच हजार वर्ष पुरानी सभ्यता में आज भी अतीत और वर्तमान के बीच की कड़ियॉ सशक्त हैं। बस्तर में अशोक द्वारा बनवाए गए बौद्ध मठ, सिरपुर के प्राचीन सभ्यता के पुरावशेष एक गौरवशाली कालखंड की कहानी कहते हैं। यहॉ की नाट्य परंपरा अत्यंत समृद्ध है, रामगढ़ में विश्व की सबसे प्राचीनतम गुफानुमा नाट्यगृह यानी थिएटर, यहां की हजारों वर्षों की सभ्यता का प्रमाण हैं। रायगढ़ घराने का नृत्य या एशिया महाद्वीप का संगीत एवं कला को

dedicated to Music and fine Arts in Khairagarh the Spectacular Baster Dussera, the Rajiv Lochan Dham of Rajim also known as Prayag of Chhattisgarh, Bhoramdeo-Popularly known as Khajuraho of Chhattisgarh or for that matter the "Bhikshuni" Vihar of Turturiya - these are all acknowledged to be the splendid vindication of our historical and archeological heritage and animated proofs of rich architectural excellence.

Chhattisgarh is a State of cultural magnificence, where simplicity, plainness and goodness are mingled in the people's life. The exquisitely attractive folk art is another specific characteristic of this state, which has earned international acclaim as well.

The stage plays of legendary Habeeb Tanvir have been acclaimed world over. Similarly Pandwani exponent Teejan Bai, Pandwani Guru Shri Jhaduram Devangan Panthi dance exponent Devdas Banjare and Bharthari performer Surujbai Khande have also carved a niche for themselves as phenomenal folk artistes and thereby established Chhattisgarh in the international fraternity of art and culture. Panthi, Pandwani, Karma, Bharthari, Suwa-Geet, Jas-Geet, Raut Nacha, Tribal dance are some of the prominent folk tales of this state.

Cultural and literary affluence of Chhattisgarh has been its special identity. Litterateurs have crowned the literary tradition of Chhattisgarh with glory by virtue of their literary excellence. Some of illustrious litterateurs like Babu Rewaram, Pinglacharya, Bhanu Kavi, Pandit Lochan Prasad Pandey, Padmshri Pandit Mukutdhar

समर्पित एकमात्र संस्थान खैरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय, बस्तर का दशहरा महोत्सव, राजिम में छत्तीसगढ़ का प्रयाग कहा जाने वाला भगवान राजीव लोचन का धाम, छत्तीसगढ़ के खजुराहो के नाम से प्रसिद्ध भोरमदेव हो या तुरतुरिया के भिक्षुणी विहार ये सब छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक पुरातात्विक धरोहर और समृद्ध स्थापत्य कला के जीवंत प्रमाण हैं।

छत्तीसगढ़ सांस्कृतिक वैभव का प्रदेश है जहाँ जन जीवन में सरलता सादगी और सज्जनता स्वाभाविक रूप से समाहित है। छत्तीसगढ़ की एक विशेषता यहाँ की लोक कला है। छत्तीसगढ़ की लोक कला देश विदेश में चर्चित रही है।

हबीब तनवीर के नाटक विश्व के कई देशों में सराहे गए हैं। पंडवानी गायिका श्रीमती तीजन बाई, पंडवानी गुरू श्री झाड़ूराम देवांगन, पंथीनृत्य कलाकार श्री देवदास बंजारे और भरथरी गायिका सुश्री सूरज बाई खांडे जैसे लोक कलाकारों ने विश्व रंगमंच पर छत्तीसगढ़ की लोक कला को स्थापित किया है। पंथी, पंडवानी, करमा, भरथरी, सुवागीत, जसगीत, राउतनाच, आदिवासी नृत्य आदि छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध लोक कथाएँ हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य की सांस्कृतिक और साहित्यिक समृद्धि ही यहाँ की विशिष्टता रही है। छत्तीसगढ़ की साहित्यिक परम्परा को यहाँ के महान साहित्यकारों ने अपनी रचनाधर्मिता से गौरवान्वित किया है। साहित्य साधक बाबू रेवाराम, पिंगलाचार्य, भानु कवि, स्व. पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय, पद्मश्री स्व. मुकुटधर पाण्डेय, स्व. पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी, स्व. बलदेव प्रसाद

Pandey, Dr. Padumlal Punnalal Bakshi, Dr. Baldev Prasad Mishra, Gajanan Madhav Muktibodh and Shrikant Verma have contributed generously to glorify the world of Literature in Chhattisgarh.

Along with national language Hindi litterateurs of the State language "Chhattisgarhi" with their writings have upheld the literary traditions of the State. There has been constant concerted effort in the direction of development and expansion of the language with the purpose of protection and enrichment of the State language Chhattisgarhi after the formation of the State of Chhattisgarh.

There has been unparalleled contribution of Chhattisgarh in the Indian freedom struggle. Here many such patriots, the valorous servants of the motherland were born who raised the honour of this soil by their self sacrifices, Martyr Veer Narayan Singh, revolutionary Surendra Sai, Gundadhoor, Pandit Sunderlal Sharma, Dr. Khoobchand Baghel, many such names, whose performances and personalities are the unique examples of patriotism.

Chhattisgarh has got a surfeit of mineral resources of quality with immense productivity and superb bewitching beauty existing on the surface of the earth is beyond description. We the natives of Chhattisgarh feel immensely proud of its historical, archeological and cultural splendour. The people of Chhattisgarh are hard working and dedicated towards development and conservation of their environment. Their rich folklore is main source of sustenance.

मिश्र, स्व. गजानंद माधव मुक्तिबोध तथा स्व. श्रीकांत वर्मा जैसे साहित्य वट वृक्षों की सुन्दर छाया में यह प्रदेश संस्कारित होता रहा है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ साथ राज्यभाषा छत्तीसगढ़ी के भाषायी साहित्यकारों ने भी अपने लेखन से राज्य की साहित्यिक परिपाटी को अक्षुण्ण बनाए रखा है। छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के पश्चात राज्यभाषा छत्तीसगढ़ी को संरक्षण और संवर्धन देने के उद्देश्य से भाषा के उन्नयन और व्यापीकरण की दिशा में निरंतर सामूहिक प्रयास किए जा रहे हैं।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में छत्तीसगढ़ का अद्वितीय योगदान रहा है। यहाँ के रणबांकुरे मातृभूमि के सेवक ऐसे अनेक देशभक्त हुए जिन्होंने अपने बलिदान से इस मिट्टी का सम्मान संवर्धित किया। शहीद वीर नारायण सिंह, क्रांतिकारी सुरेन्द्र साय, गुण्डाधुर, पंडित सुन्दरलाल शर्मा, डॉ. खूबचंद बघेल, ऐसे अनेकों नाम हैं, जिनका कृतित्व और व्यक्तित्व देशभक्ति का अनुपम उदाहरण है।

छत्तीसगढ़ की धरती के गृर्भ में प्राकृतिक संपदा का अपार भण्डार विद्यमान है जिसकी गुणवत्ता के साथ धरती की सतह पर विद्यमान असीम उत्पादकता एवं मनोहारी सौन्दर्य के बारे में समग्र रूप से बखान करने का सामर्थ्य तो वास्तव में शब्दों में हो नहीं सकता। यहां के ऐतिहासिक, पुरातात्विक तथा सांस्कृतिक वैभव पर भी हम छत्तीसगढ़वासियों को अपार गौरव की अनुभूति होती है।

Steeped in the folklores, the people of Chhattisgarh are full of life, hard working and irresistible desire for development with equal source of responsibility towards environment protection.

The people of India or of any part of the world cannot but be amazed and attracted to know the characteristics of Chhattisgarh. The number of people eager and prompt to invest in industries along with other areas has ever been increasing. The number of people eager to know about Chhattisgarh more intimately has also been increasing constantly. Having seen this changing scenario it seems that Chhattisgarh has already launched its journey towards the pinnacle of prosperity.

This state is also known as "Rice bowl". High breed and rare quality paddy varieties are cultivated here. The farmers of Chhattisgarh have established their identity globally by successfully harvesting these paddy crop and won international recognition.

As the nature has blessed this state, with huge greenery, Chhattisgarh is having the third largest forest cover in the country in terms of total area. Around 59,772 sq km of land is covered with thick forest, which is 44.20 percent of the total area. The rich reserves of diamond, gold, bauxite, iron ore, dolomite and other precious minerals have immensely motivated this state to proceed towards the summit of success. The moment we start the

यहॉ के लोकरंगों से सराबोर जीवन्त जन–जीवन तथा परिश्रमी निवासियों में विकास की अदम्य इच्छा शक्ति भी है और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी की भावना भी।

भारत तथा दुनिया के किसी भी भाग के लोग छत्तीसढ़ की विशेषताओं को जानकर आश्चर्यचकित तथा आकर्षित हुए बिना रह नहीं पाते। छत्तीसगढ़ में उद्योग सहित विभिन्न क्षेत्रों में निवेश करने के इच्छुक और तत्पर लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। छत्तीसगढ़ के बारे में और भी ज्यादा करीब से जानने वालों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है। इस बदलते वातावरण को देखकर लगता है कि छत्तीसगढ़ समृद्धि के शिखर की ओर बढ़ने की अपनी यात्रा प्रारम्भ कर चुका है।

छत्तीसगढ़ को 'धान का कटोरा' कहा जाता है। विश्व की उन्नत विशिष्ट किस्मों के धान का उत्पादन यहॉ के खेतों में होता है। यहॉ के मेहनतकश किसान कास्तकारों ने धान की पैदावार के माध्यम से देश दुनिया में एक अलग पहचान दी है।

छत्तीसगढ़ प्रदेश को पकृति ने असीम दुलार दिया है, वन क्षेत्रफल के हिसाब से छत्तीसगढ़ देश का तीसरा बड़ा राज्य है। राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 59,772 वर्ग किलो मीटर रकबा यानी 44.2 प्रतिशत भाग वनों से आच्छादित है। छत्तीसगढ़ की धरती के गर्भ में सोना, बॉक्साइट, लोह अयस्क, डोलोमाइट एवं अन्य उपयोगी खनिजों के साथ–साथ हीरा जैसे बहुमूल्य सम्पदा की खोज ने इस प्रदेश को समृद्धि के शिखर की ओर बढ़ने की दिशा में प्रेरित किया है। हीरा उत्खनन के

exploration of diamond, Chhattisgarh would become the most prosperous state of the country.

The iron ore found in Bastar is evaluated to be the quality rich mineral which is exported by the National Mineral Development Corporation (NMDC). Similarly, where as the power generation units of National Thermal Power Corporation (NTPC), other power plants of Chhattisgarh State Electricity Company and the private sector units have made Chhattisgarh a "zero Power Cut" state. Chhattisgarh is marching towards the path of growth by supplying power to several other states as well.

The bewitching natural beauty of Surguja and Bastar coupled with the historical, archeological and cultural glory is matter of immense pride for us.

Chhattisgarh has its own place on the political, cultural and social scenario of the country. Nature's infinite love and benefication of scholars and thinkers have endowed it with a unique identity.The generous gift of nature and the blessings of the sages and enlightened masters have also given a unique identity to this state. We have always admired and adopted the policy of tolerance, mutual understanding and collective decision-making, which are the three main characteristics of democracy. As a matter of fact, the common people of Chhattisgarh have immensely contributed in upholding the traditional human values.

प्रयासों के पूर्ण हो जाने तक हमारा छत्तीसगढ़ भारतवर्ष के सबसे सम्पन्न प्रदेश के रूप में शीर्ष स्थान पर होगा।

बस्तर के लौह अयस्क की गणना उच्च कोटि के अयस्क के रूप में स्थापित है, जिसे बैलाडीला से राष्ट्रीय खनिज विकास निगम (एन.एम.डी.सी) द्वारा निर्यात किया जाता है। राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम (एन.टी.पी.सी.) की विभिन्न इकाईयों सहित छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत कम्पनी एवं अन्य निजी बिजली उत्पादकों द्वारा स्थापित इकाईयों के राज्य में स्थापना के फलस्वरूप छत्तीसगढ़ राज्य को जहॉ "जीरो पावर कट" राज्य होने का गौरव प्राप्त हुआ है, वहीं यह राज्य अनेक अन्य प्रदेशों को बिजली की आपूर्ति कर प्रगति की राह पर भी अग्रसर हो रहा है।

छत्तीसगढ़ के बस्तर एवं सरगुजा के मनोहारी प्राकृतिक सौंदर्य तथा ऐतिहासिक, पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक वैभव पर हम छत्तीसगढ़वासियों को असीम गौरव की अनुभूति होती है।

देश के राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पटल पर छत्तीसगढ़ का अपना स्थान है। प्रकृति के असीम दुलार और विद्वानों–मनीषियों के उपकार ने इसे एक अलग पहचान दी है। लोकतंत्र के प्राणतत्व–सहिष्णुता, आपसी समझ और सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता को यहॉ हमेशा सम्मान दिया गया है। सच पूछें तो देश के परम्परागत मानवीय मूल्यों को बचाए रखने में छत्तीसगढ़ की आम जनता का उल्लेखनीय योगदान रहा है।

The present Legislative Assembly of Chhattisgarh is the third Legislative Assembly with 91 members including a nominated member of Anglo Indian community. The Chhattisgarh Legislative Assembly has set an exemplary trend, while successfully following the highest Parliamentary practices and procedures. This house has always witnessed an ideal parliamentary atmosphere with desired co-ordination between the treasury bench and the Opposition.

Chhattisgarh Assembly is the first in the country, where a rule has been unanimously incorporated in the rules of procedure and conduct of business that during the course of debate if any honourable member enters the Well of the House would get automatically suspended from the proceedings of the house. Therefore scenes of disrupting the proceeding of house by entering in the well of House are rare.

In the year 2005, the State Assembly had another moment of pride, when the "All India Conference of Presiding Officers and Secretaries" had been successfully organized over here. Today this State Assembly is witnessing yet another historical day, when the fourth India and Asia Region Commonwealth Parliamentary Conference is being inaugurated here.

In a democracy, it is a matter of pride to be a member of any Legislative Body. This automatically puts an added

छत्तीसगढ़ राज्य की वर्तमान विधानसभा तृतीय विधानसभा है। नब्बे सदस्यीय इस विधानसभा में एक नाम निर्दिष्ट एंग्लो इंडियन सदस्य सहित सदस्यों की कुल संख्या 91 है। छत्तीसगढ़ राज्य विधानसभा उच्च संसदीय परम्पराओं और प्रक्रियाओं के परिपालन में अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करने में सफल रही है। आदर्श संसदीय वातावरण पक्ष–प्रतिपक्ष के मध्य अपेक्षित समन्वय सदैव ही इस विधानसभा में विद्यमान रहा है। छत्तीसगढ़ विधानसभा को देश की पहली ऐसी विधानसभा होने का गौरव प्राप्त है जिसने सदन की कार्य संचालन नियमावली में सर्वसम्मति से यह प्रावधानित किया है कि वाद–विवाद के दौरान कोई भी माननीय सदस्य अगर गर्भ गृह में प्रवेश करता है तो वह सदन की कार्यवाही से स्वमेव निलंबित हो जायेगा। फलस्वरूप दिन–प्रतिदिन सभा के गर्भगृह में आकर सभा की कार्यवाही में अवरोध के उदाहरण यहॉ विरले ही हैं।

छत्तीसगढ़ विधानसभा के लिए यह भी गौरव का प्रसंग रहा कि वर्ष 2005 में द्वितीय विधानसभा के कार्यकाल में अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों एवं सचिवों का सम्मेलन इस विधान सभा ने सफलतापूर्वक आयोजित किया और आज छत्तीसगढ़ विधानसभा के लिए एक और ऐतिहासिक दिन है जब यहॉ चतुर्थ भारत एवं एशिया क्षेत्र सम्मेलन का शुभारंभ हो रहा है।

लोकतंत्र में किसी भी विधायी निकाय का सदस्य होना

responsibility on the member because the Legislative House are apex democratic forum. It becomes mandatory for the member that they ought to be fully concerned with the section of the society whom they represent.

The Commonwealth Parliamentary Association has always been playing a vital role, in ensuring a well-organized conduct of the people's representative institutions, as also towards the development of the society. The sole objective of such an initiative is to strengthen the trust of the common people towards democratic institutions. In this context, two main subjects have been decided for discussion in this "Fourth India and Asia Region Conference". First- Terrorism and Naxalism: The challenges before democracy and need for joint effort in the region. Second- food security and regional cooperation: Role and Responsibility of the legislature. You are very well aware of the relevance of both these topics.

The basic objective of Commonwealth Parliamentary Association is to strengthen the Parliamentary form of governance and to make it more effective. Various initiative have been taken to ascertain the role of elected people's representing towards the need and challenges of democratic nations and also in solving the problem through this association.

एक प्रतिष्ठा की बात है, इससे एक उत्तरदायित्व भी सदस्य पर आ जाता है क्योंकि विधायी सदन जनप्रतिनिधियों की सभा और सर्वोच्च लोकतांत्रिक मंच है। विधायी निकायों के जनप्रतिनिधियों के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि वे उस समाज के उन वर्गों के दृष्टिकोण का पूरा ख्याल रखें, जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं।

जनप्रतिनिधि संस्थाओं की समाज के विकास और व्यवस्था के सुव्यवस्थित संचालन में भूमिका सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण कार्य राष्ट्रकुल संसदीय संघ अब तक करता आ रहा है। इन प्रयासों का उद्देश्य एक ही है कि प्रजातांत्रिक संस्थाओं के प्रति आमजनों का विश्वास और अधिक सुदृढ़ हो। इसी तारतम्य में चौथे भारत तथा एशिया क्षेत्र सम्मेलन में चर्चा के दो मुख्य विषय निर्धारित किये गये हैं। प्रथम – आतंकवाद एवं नक्सलवाद : प्रजातंत्र के समक्ष चुनौती–क्षेत्र में संयुक्त प्रयास की आवश्यकता; द्वितीय – खाद्य सुरक्षा एवं क्षेत्रीय स्तर पर सहयोग : विधायिका की भूमिका एवं जिम्मेदारी। इन दोनों ही विषयों की प्रासंगिकता से आप भली–भॉति अवगत हैं।

संसदीय शासन प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाना ही राष्ट्रकुल संसदीय संघ का मूल उद्देश्य है। इस संघ के माध्यम से सदस्य प्रजातांत्रिक देशों की आवश्यकताओं और समस्याओं पर निर्वाचित जनप्रतिनिधि की भूमिका को सुनिश्चित करते हुए समस्याओं के निदान की पहल इसके माध्यम से

The Commonwealth Parliamentary Association has made efforts to establish the point that in the democratic system, the parliamentary house is the apex authority and the elected members can certainly make their best contribution in solving the problems. The member countries can benefit each other by sharing their knowledge and experience. We all are aware that parliamentary chamber is a sacred place where sentiments of people are reflected. Hence it is very much necessary for the members to utilize the time to the optimum level and emphasise the topic of debate with a positive sense. The worth and relevance of this house depends upon the members views on public welfare issues. In a large developing country like India and the member countries, who have ascertained aim to provide social and economic justice to their common people, it is essential that the decision-makers and the members of the parliamentary houses should be more aware towards the issues of public welfare and people's aspirations and needs.

The main objectives of this conference is to debate over the common problems of the member countries and share the experience among each others. It is very much mandatory in a democratic system, which has adopted the parliamentary form of governance, that the elected people's representatives role is extensive and effective their opinion

निरंतर जारी है।

राष्ट्रकुल संसदीय संघ ने इस बात को स्थापित करने का प्रयास किया है कि लोकतंत्र में संसदीय सदन सर्वोच्च है और उसके निर्वाचित जनप्रतिनिधि समस्या के समाधान में अपना श्रेष्ठतम योगदान दे सकते हैं। सदस्य देश ज्ञान और अनुभव से एक दूसरे को लाभान्वित भी कर सकते हैं। हम सब इस तथ्य से अवगत हैं कि संसदीय संस्था वह पवित्र स्थल है जो जनभावनाओं को प्रतिबिंबित करता है। इसलिए किसी भी सदन के लिये यह आवश्यक है कि जनप्रतिनिधि सदन में चर्चा हेतु विषय का चयन एवं उपलब्ध चर्चा/बहस के समय का अधिकाधिक सकारात्मक उपयोग करें। संसदीय सदन की सार्थकता उस सदन के सदस्यों के लोक कल्याणकारी विषयों के प्रति दृष्टिकोण पर निर्भर है। भारत जैसे विशाल विकासशील देश एवं अन्य सदस्य देश जिनने स्वयं जनता के लिए सामाजिक तथा आर्थिक न्याय प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया है आज इस बात की आवश्यकता है कि नीति निर्धारकों तथा संसदीय संस्थाओं के सदस्यों में लोक कल्याण और आम लोगों की अपेक्षाओं एवं आवश्यकताओं के प्रति जागरूक हो।

इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य सदस्य देशों के मध्य समान समस्याओं पर अपने अनुभवों का वैचारिक विमर्श करना है। संसदीय शासन प्रणाली को अपनाने वाली प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में यह आवश्यक है कि निर्वाचित जन

on various national and international issues, especially for the conservation and the furtherance of democratic values. I am fully confident that the topics taken up in this conference, and the subsequent conclusion of the debate on these topics, would prove to be helpful in reaching an effective solution of the problems, in the time to come.

It is indeed a matter of privilege for entire Chhattisgarh state that both the topics, selected for the "Fourth India and Asia Region Conference", are quite relevant and important not only for India but for the Asia region as well. Of course, we would all be benefited from the experience and thoughts to be shared in this conference. Being a people's representative, we are all associated with the problems and achievements of any particular region.

As terrorism and Naxalism has affected entire Asia along with India in the recent past years, food security is also an equally important issue, on which many countries of the world are discussing seriously through different international forum. Our honourable guests and invited dignitaries would be sharing their views and experiences on both these topics and definite direction will be obtained from their experience to solve these problem and with these experience help in getting the solution.

We have also made an arrangement of visit for all the distinguished guest and invitees of the Fourth India and Asia Region Conference, so that they may witness the places of archeological and historical significance. We

प्रतिनिधि की भूमिका व्यापक एवं प्रभावी हो। स्थानीय राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर उनका दृष्टिकोण क्या है? – यह जानना लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन के लिए अत्यंत आवश्यक है। मुझे पूर्ण विश्वास है इस सम्मेलन के माध्यम से जो विषय चर्चा के लिए निर्धारित किए गए हैं उन चर्चाओं, विचारों के आदान–प्रदान से प्राप्त निष्कर्ष भविष्य में समस्याओं के समाधान में सहायक सिद्ध होंगे।

छत्तीसगढ़ प्रदेश के लिए यह उपलब्धि है कि राष्ट्रकुल संसदीय संघ भारत क्षेत्र ने सम्मेलन के जो दो विषय चयनित किए हैं वे दोनों ही विषय एशिया एवं भारत क्षेत्र के लिये आज सबसे महत्वपूर्ण हैं। निश्चित तौर पर इस सम्मेलन में व्यक्त विचारों और अनुभवों से हम सब लाभान्वित होंगे। हम सब जनप्रतिनिधि होने के नाते क्षेत्र विशेष की समस्या एवं उपलब्धियों से सीधे तौर पर जुड़े हुए हैं।

आतंकवाद एवं नक्सलवाद की पीड़ा से जहाँ भारत सहित एशिया क्षेत्र विगत वर्षों से सर्वाधिक प्रभावित है, वहीं खाद्यान्न सुरक्षा भी एक ऐसा विषय है, जिस पर विश्व के अनेक देशों में विभिन्न फोरम पर गहन विचार–विमर्श जारी है। इन दोनों ही विषयों पर हमारे आमंत्रित अतिथिगण अपना अभिमत रखेंगे और उनके अनुभवों से इन समस्याओं के समाधान के लिए एक निश्चित दिशा मिलेगी।

चतुर्थ एशिया भारत क्षेत्र सम्मेलन में आप सम्माननीय अतिथियों के लिए राज्य के ऐतिहासिक पुरातात्विक, महत्व के

hope that this would help them to form an idea about the archeological and cultural glory of Chhattisgarh.

Honourable guests, now, I would like to draw your kind attention on another issue, which is somewhat different. One of the members of the Commonwealth Parliamentary Association, Pakistan had experienced one of the worst tragedies in its North-West province in August 2010, when flood caused large scale loss of human lives and property. Similarly several hundreds of people lost their lives due to cloud burst in Leh. I express my grief over both of these natural tragedies and pay homage to the departed souls

It has obviously been a gift for us, to have your gracious presence in this august function. Although we have tried our level best, to provide you best hospitality and make you feel comfortable in your journey and stay, if you notice any unknown mistake or lapse on our part, we sincerely apologize for the same, because that would have occurred only due to our lack of experience, especially in hosting such a big event.

The guidance of the secretariat of the India Region Commonwealth Parliamentary Association has been quite praise-worthy. The Secretary General of Lok Sabha, Rajya

केन्द्रों के भ्रमण का कार्यक्रम भी हमने निर्धारित किया है। हमे आशा है आप सभी इस भ्रमण के माध्यम से छत्तीसगढ़ की पुरातात्विक, सांस्कृतिक महत्ता और उसकी ऐतिहासिकता का करीब से आंकलन कर सकेंगे।

माननीय अतिथिगण, मैं आप सबका ध्यान विषय से हटकर एक दूसरे विषय की ओर ले जाने की अनुमति चाहूँगा। राष्ट्रकुल संसदीय संघ के सदस्य एवं हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर प्रांत में अगस्त 2010 में आई भयंकर बाढ़ से जान–माल की बहुत बड़ी क्षति हुई वहीं भारत के उत्तरी क्षेत्र के लेह में बादल फटने से हजारों लोग काल–कवलित हो गये। इस अवसर पर इन दोनों ही प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित जनों के प्रति मैं हार्दिक संवेदना एवं दुख व्यक्त करता हूँ।

इस सम्मेलन के आयोजन में आप सम्माननीय जनों की उपस्थिति निश्चित तौर पर हमारे लिए एक उपहार है। यद्यपि हमने प्रत्येक स्तर पर आप अतिथियों के स्वागत तथा सुविधाजनक प्रवास के लिए यथासंभव प्रयास किया है, किन्तु यह एक वृहद आयोजन है और अनुभव के अभाव में, संभव है कि हमसे कहीं पर व्यवस्था में चूक अथवा आव–भगत संबंधी कोई त्रुटि या खामी हो गयी हो, इसके लिए आप सभी से हमारा विनम्र आग्रह है कि हमें क्षमा करेंगे।

इस सम्मेलन के आयोजन में भारत क्षेत्र राष्ट्रकुल संसदीय संघ सचिवालय का मार्ग दर्शन उल्लेखनीय रहा है। लोकसभा

Sabha, their officers and staff have extended their full cooperation. This gesture, again, has truly been laudable.

A this point of time I extend my sincere thanks and gratitude to renowned Hon. Chief Minister of Chhattisgarh Dr. Raman Singh Ji for his whole hearted support and co-operation at every step in organizing this conference. I would also like to thank his colleagues in the council of Ministers, Chief Secretary, Secretaries, Officers of State administration and Shri Devendra Verma, Secretary Legislature and Ex-Officio Secretary, CPA- Chhattisgarh Branch and all the officers and staff of the host secretariat without whose untiring and enthusiastic co-operation the successful organization of a conference of this magnitude would not have been possible.

Hon'ble Chairperson of the Conference and all the distinguished Delegates, I am once again grateful to all of you for your esteemed participation in this conference. I am sure that your stay at Raipur - the Capital city of "Credible Chhattisgarh" must have been comfortable, pleasant and memorable one.

In the end, I conclude with the hope that the deliberation which takes place in this conference will not only strengthen the democratic polity but will also add luster to it.

Thank you,
Jai Hind, Jai Chhattisgarh

और राज्य सभा के महासचिव, उनके अधीनस्थ अधिकारी एवं कर्मचारियों ने छत्तीसगढ़ शाखा तथा छत्तीसगढ़ विधानसभा सचिवालय को जिस सहजता और सहृदयता से इस सम्मेलन के आयोजन में सहयोग दिया है वह उल्लेखनीय है। इस हेतु मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ।

इस अवसर पर मैं छत्तीसगढ़ राज्य के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी को सम्मेलन के आयोजन में हर कदम पर समर्थन एवं सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद एवं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मैं मंत्रिपरिषद के उनके समस्त सहयोगी मंत्री, मुख्य सचिव, सचिव तथा राज्य प्रशासन के सभी अधिकारियों तथा श्री देवेन्द्र वर्मा, सचिव, विधानसभा एवं पदेष सचिव–राष्ट्रकुल संसदीय संघ – छत्तीसगढ़ शाखा तथा आयोजक सचिवालय के समस्त अधिकारी, कर्मचारियों जिनके अथक, उत्साहपूर्ण सहयोग के बिना इतने विशाल सम्मेलन को सफलतापूर्वक आयोजित करना संभव नहीं था को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूँ।

सम्मेलन की माननीय सभापति एवं समस्त विशिष्ट प्रतिनिधियों की सम्मेलन में उनकी गरिमामयी सहभागिता के लिये आभार व्यक्त करता हूँ।

मुझे विश्वास है कि विश्वसनीय छत्तीसगढ़ की राजधानी– रायपुर में आपका यह प्रवास सुविधापूर्ण, आनंद दायक एवं स्मरणीय होगा।

अंत में इस अपेक्षा के साथ कि सम्मेलन में होने वाले विचार–विमर्श से लोकतांत्रिक शासन प्रणाली न केवल सुदृढ़ होगी अपितु कांति में अभिवृद्धि होगी।

धन्यवाद
जय हिन्द, जय छत्तीसगढ़